पशुओं में टीकाकरण क्यों अनिवार्य है ?

निदेशालय
पशुपालन एवं डेरी विभाग, हरियाणा

बेज नं0 9–12, सैक्टर–2 पंचकूला, हरियाणा

फोन नं0 0172–2574664

Website www.pashudhanharyana.gov.in Email- pashudhanhar@rediffmail.com

पशु पालन हमारे देश में कृषि से जुड़ा हुआ व्यवसाय है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशु पालन बहुत से किसानों व बेरोजगारों की आजीविका का एक साधन बन चुका है। पशुओं की देखभाल व खान–पान का ठीक ध्यान इस व्यवसाय को लाभदायक बनाने के लिए अतिआवश्यक है। पशुओं में समय–समय पर विभिन्न बीमारियां भी आती रहती हैं। जिनके कारण बहुत से पशु की मृत्यु हो जाती।

कुछ बीमारियों में दुधारु पशुओं की मृत्यु तो नहीं होती लेकिन बीमारी के कारण उत्पादकता में कमी आ जाती है जिससे पशुपालक को बहुत वित्तीय हानि होती है जिससे उनकी आजीविका गड़बड़ा जाती है। इसलिए पशुओं को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण बहुत जरूरी हो जाता है। कहावत भी है बीमारी से बचाव भला। जिसके लिए पशुओं को समय–समय पर पशुपालन विभाग द्वारा बीमारियों से बचाने हेतु मुफ्त टीकाकरण अभियान चलाया जाता है। पशुओं को बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण की जानकारी पशु पालकों को होनी आवश्यक है ।

1. **गलघोटू : (एच.एस.)** इस बीमारी के बचाव हेतु वर्ष में दो बार पशुओं को टीका लगवाना जरूरी है। गलघोटू का टीकाकरण जून व दिसम्बर के माह में विभाग द्वारा घर–घर जाकर मुफ्त किया जाता है। यह टीका 5 मिली. चमड़ी के नीचे लगाया जाता है।

2. **मुँहखुर : (एफ.एम.डी.)** इसका टीकाकारण मुंह व खुर रोग के बचाव के लिए भारत सरकार के मुंहखुर कार्यक्रम के तहत विभाग द्वारा घर–घर जाकर मुफ्त किया जाता है। यह टीका वर्ष में दो बार मई एवं नवम्बर के माह में किया जाता है।

3. **लंगड़ा बुखार : (बी.क्यू.)** वर्ष में एक बार 5 मिली. चमड़ी के नीचे यह टीका लगाया जाता है। यह टीका छोटे बच्चों/जवान बछड़ों में वर्शा ऋतु से पहले लगाना जरूरी है। यह टीका हरियाणा में

पशुपालन विभाग द्वारा मुफत लगाया जाता है ।

4. भेड़ों में चेचक रोग : इस रोग के बचाव हेतु 0.5 मिली. टीका पिछली टाँग के अन्दर की तरफ चमड़ी के नीचे लगाया जाता है। जिन क्षेत्रों में यह बीमारी आती है वहाँ वर्ष में तीन बार यह टीका लगाना जरूरी है। यह टीका हरियाणा के पशुपालन विभाग द्वारा में मुफ्त लगाया जाता है।

5. पेस्ट डेस पेटिट्स रूमीनैट : (पी.पी.आर.) यह बीमारी बकरियों व भेड़ों में होती है। इस बीमारी के कारण मृत्युदर 100 प्रतिशत तक हो सकती है। इस बीमारी का टीका 1 मिली. चमड़ी के नीचे लगाया जाता है। यह टीका तीन वर्ष बाद पुनः लगवाना चाहिए। यह टीका हरियाणा में पशुपालन विभाग द्वारा मुफ्त लगाया जाता है।

6. इन्टेरोटोक्सिमिया : (ई.टी.वी.) यह बीमारी भेड़ व बकरियों में होती है। इसके बचाव के लिए 2.5 मिली. टीका चमड़ी के नीचे लगाते हैं। यह टीका 14 दिनों के बाद पुनः 2.5 मिली. चमड़ी के नीचे लगाया जाता है ताकि बीमारी से लड़ने की पूर्ण शक्ति पशुओं में पैदा हो सके। इस टीके को एक वर्ष बाद पुनः लगवाना जरूरी है। यह टीका हरियाणा के पशुपालन विभाग द्वारा मुफ्त लगाया जाता है।

7. हड़कावपन (रेबीज) : जिन पशुओं को पागल कुत्ता काट ले उनमें इस बीमारी के बचाव हेतु जल्दी से जल्दी टीकाकरण शुरु करवा दें। आजकल रेबीज के बचाव हेतु 6 टीके लगवाने जरूरी हैं। पहला टीका जितना जल्दी शुरु किया जा सके उतना ही ठीक रहता है। यदि चेहरे पर पागल कुत्ते ने काटा हो तो पहला टीका दो गुनी खुराक का लगाया जाता है। इसके बाद तीसरे, सातवें, चादहवें, अट्ठाइसवें व नब्बेवें दिन भी टीका लगवाना जरूरी होता है। यह टीका बाजार में उपलब्ध है।

8. स्वाईन फीवर : यह बीमारी सुअरों में होती है। इस बीमारी के बचाव हेतु साल में एक बार टीका लगवाना जरूरी होता है। 10 सुअरों के लिए एक वायल में टीका उपलब्ध है जिसे 10 मि.ली. नोरमल सलाइन में घोलकर 1 मि.ली. प्रत्येक सुअर को जाँघ के अन्दर की तरफ चमड़ी के नीचे लगाया जाता है जो विभाग द्वारा मुफ्त लगाया जाता है।

बीमारियों से बचाव के लिए पशुओं में निम्नलिखित तालिका के हिसाब से टीकाकरण (वैक्सीन) करवाएं

महीना	गाय–भैंस	भेड़–बकरियों में	सुअरों
जनवरी	संक्रामक गर्भपात या ब्रूसेलेसिज से बचाव का टीका 0–4 महीने की बछड़ियों/कटड़ियों में केवल एक बार (एस–19) 2 मि .ली. चमड़ी के नीचे		
फरवरी		इ.टी./फड़किया से बचाव के लिए 2.5 मि.ली. चमड़ी के नीचे 15 दिन बाद दोबारा लगाएं	
मार्च			
अप्रैल			सूकर ज्वर का टीका 1 मि. ली. चमड़ी के नीचे
मई	मुंह–खुर रोग का टीका 2 मि.ली. चमड़ी के नीचे	मुंह–खुर रोग का टीका 1 मि.ली. चमड़ी के नीचे	
जून	गलघोंटू रोग का टीका 5 मि.ली. चमड़ी के नीचे		
जूलाई	लंगड़ा बुखार बी .क्यू., यदि जरूरत हो तो (5 मि.ली. चमड़ी के नीचे)		
अगस्त		पी.पी.आर. का टीका 1 मि. ली. चमड़ी के नीचे (3 साल तक कारगर)	
सितम्बर			
अक्टूबर		माता रोग का टीका 0.5 मि. ली. चमड़ी के नीचे	सूकर ज्वर का टीका 1 मि. ली. चमड़ी के नीचे
नम्वबर	मुंह–खुर रोग का टीका 2 मि.ली. चमड़ी के नीचे		
दिसम्बर	गलघोंटू रोग का टीका 5 मि.ली. चमड़ी के नीचे		
पूरे वर्ष	0–4 माह के बच्चों में, वर्ष में किसी भी समय		